आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 7 अंक : 07 मार्च-2020 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

DECADE YEAR 2019 RAJUVAS 2020

पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन पर राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन संपन्न

देश की आर्थिक स्थिति मजबूत करने में पशुपालन की अहम भूमिका : राज्यपाल श्री कलराज मिश्र

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा "कृषि अर्थव्यवस्था और उद्यमशीलता बढ़ाने हेतु उच्च गुणवत्ता वाले पशु उत्पादों को प्राप्त करने के लिए पशुधन प्रबंधन के प्रतिमानों में बदलाव" विषय पर राज्य कृषि पशुधन प्रबंधन संस्थान दुर्गापुरा, जयपुर में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन का समापन 6 फरवरी को संपन्न हुआ। इससे पूर्व 4 फरवरी को पशुपालन मंत्री श्री लालचंद कटारिया ने सम्मेलन का उद्‌घाटन किया। सियाम ऑडिटोरियम में समापन समारोह के मुख्य अतिथि राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने कहा कि अगर सही तरीके से पशुपालन क्षेत्र का विकास किया जाये तो यह देश की आर्थिक स्थिति मजबूत करने में अहम भूमिका का योगदान कर सकता है। पशुधन राजस्थान के किसानों की जीवन रेखा है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार व आय का प्रमुख साधन है। उन्होंने कहा कि समय की मांग है कि ग्रामीण किसानों, महिलाओं, युवाओं आदि को पशुपालन की आधुनिकतम तकनीक से अवगत कराकर उनकी आय में वृद्धि की जाये। राज्य के प्रत्येक क्षेत्र की जलवायु के अनुसार अनुसंधान कर पशुधन क्षेत्र में नवाचारों को विकसित करना पशु वैज्ञानिकों एवं अनुसंधानकर्ताओं के लिये चुनौतीभरा कार्य है। पशुपालन के क्षेत्र में राजुवास के योगदान की चर्चा करते हुये उन्होंने कहा कि इस वेटरनरी विश्वविद्यालय का स्वदेशी गौवंश नस्लों के संरक्षण में योगदान सराहनीय है। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने सम्मेलन के दौरान आयोजित किये गये विभिन्न तकनीकी सत्रों के परिणामों से सभी को अवगत कराया। कुलपति ने बताया पशुपालक–उद्यमी–वैज्ञानिक संवाद तथा पशुधन उद्यमिता के क्षेत्र मे स्टार्टअप विषय पर दो विशेष सत्रों का आयोजन किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत, वेटरनरी विश्वविद्यालय, मथुरा के कुलपति, प्रो. जी.के. सिंह और प्रो. जे.एस. सन्धु, कुलपति, जोबनेर कृषि विश्वविद्यालय ने भी समारोह को सम्बोधित किया। विभिन्न तकनीकी सत्रों में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इण्डियन सोसायटी ऑफ एनिमल प्रोडक्शन एवं मैनेजमेन्ट के विभिन्न वार्षिक पुरस्कारों से वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया। समारोह के अन्त में आयोजन सचिव प्रो. संजीता शर्मा ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

राज्यपाल द्वारा स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर के पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन की विभागाध्यक्ष प्रो. संजीता शर्मा को सम्मेलन में सोसायटी का संरक्षक प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन में जुटे 450 वैज्ञानिक व विशेषज्ञ

राज्य के पशुपालन मंत्री श्री लालचंद कटारिया ने 4 फरवरी को पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन पर राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री कटारिया ने कहा कि सम्मेलन में देशभर से आए वैज्ञानिक आपस में पशुपालन के नवाचारों का आदान–प्रदान करेंगे, जिससे प्रदेश के पशुपालक लाभान्वित होंगें। समारोह की अध्यक्षता कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा नें की।

मुख्यमंत्री की बजट घोषणा में पशुपालकों को तकनीकी और उन्नत प्रशिक्षण का जिम्मा वेटरनरी विश्वविद्यालय को

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने 20 फरवरी को विधानसभा में प्रस्तुत वर्ष 2020-21 के बजट भाषण में राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की प्रशिक्षण क्षमताओं के मद्देनजर विश्वविद्यालय में राज्य के 4 हजार पशुपालकों को पशुपालन तकनीकों और प्रबंधन की जानकारी के लिए प्रशिक्षण दिए जाने की घोषणा की है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने इस घोषणा का स्वागत करते हुए कहा कि इससे राज्य में पशुपालकों के सशक्तिकरण में मदद मिलेगी। राज्य के 19 जिलों में वेटरनरी विश्वविद्यालय के केन्द्र और संस्थानों में प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध हैं। इन संस्थानों में पशुचिकित्सा शिक्षा तथा वैज्ञानिक पशुपालन की विशेषज्ञ और वैज्ञानिक सेवाएं सुलभ है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के जिलों में स्थित 14 प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों सहित अन्य सभी संस्थानों में पशुपालन की उन्नत नवीन तकनीकों तथा वैज्ञानिक प्रबंधन के प्रशिक्षण कार्यों के लिए उच्च कोटि के उन्नत संसाधन और उपकरण उपलब्ध है। राज्य सरकार के इन निर्णय से वेटरनरी विश्वविद्यालय की प्रशिक्षण क्षमताओं का भी विकास हो सकेगा। इससे राज्य के पशुपालकों तक उन्नत तकनीकें शीघ्र पहुंचाने में मदद मिलेगी।

अनुसंधान और प्रसार शिक्षा परिषद् की बैठकें संपन्न
जिलों में गौशालाओं के तकनीकी सुदृढ़ीकरण का कार्य करेगा वेटरनरी विश्वविद्यालयः कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा

वेटरनरी विश्वविद्यालय की अनुसंधान और प्रसार शिक्षा परिषद् की छठी बैठकें अलग–अलग 14 फरवरी को कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस अवसर पर कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि राज्य के 14 पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के माध्यम से राज्य के दूरदराज गांव और ढाणी तक बैठे किसान और पशुपालकों तक उन्नत पशुपालन तकनीकों के प्रसार से वैज्ञानिक पशुपालन को प्रोत्साहन मिल रहा है। विश्वविद्यालय के इन केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा पशुपालकों को रोग निदान और गुणवत्ता युक्त दुग्ध उत्पादन के लिए सेवाएं सुलभ करवाई जा रही है। उन्होंने बताया कि जिलों के समग्र पशुधन कल्याण के लिए विश्वविद्यालय द्वारा उन्नत किस्म के जर्मप्लाज्म और उन्नत सांड भी उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय ने पहल करके जिले की एक–एक गौशालाओं को गोद लेकर तकनीकी सुदृढीकरण का भी कार्य भी शुरू किया जा रहा है। बैठक में सभी केन्द्रों के प्रभारियों और कृषि विज्ञान केन्द्र नोहर के प्रशिक्षण समन्वयक ने अपने प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किए। विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.ए. गौरी ने परिषद् के एजेन्डेवार विवरण प्रस्तुत किया। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के प्रमुख अन्वेषक प्रो. आर.के. धूड़िया ने केन्द्रों की प्रमुख उपलब्धियों की जानकारी दी।

अनुसंधान परिषद् की बैठक

अनुसंधान परिषद् की छठी बैठक में कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय के बीकानेर सहित पूरे राज्य में स्थित 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्रों के सभी प्रकार के उत्पादों को जैविक प्रमाणीकरण की कार्यवाही शुरू की गई है। सभी पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर कृषि उत्पादन के लिए सौर ऊर्जा की आपूर्ति की जानी चाहिए। इन केन्द्रों को सौर ऊर्जा और जल संरक्षण के मॉडल रूप में विकसित करने के निर्देश दिये गए। कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि सभी पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर पशुआहार संयंत्र भी स्थापित किये

जायेंगे। जैविक उत्पाद और पशु आहार से स्वस्थ पशु और गुणवत्तायुक्त उत्पाद मिलेंगे। कुलपति ने निर्देश दिया कि इन केन्द्रों पर कार्यशाला आयोजित करके आमजन को अनुसंधान परिणामों से अवगत करवाया जाए। बैठक में प्रमुख अन्वेषकों ने भेड़, बकरी, भैंस की विभिन्न नस्लों और केन्द्रों पर चल रही अनुसंधान परियोजनाओं के प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किए। वेटरनरी विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक प्रो. आर.के. सिंह ने एजेन्डे वाईज प्रस्ताव प्रस्तुत किए जिनका परिषद ने अनुमोदन कर दिया।

पशु रोग की अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना में वेटरनरी विश्वविद्यालय बना सहभागी केन्द्र

संयुक्त राष्ट्र संघ की पहल पर पशुओं और मत्स्य में रोगाणुरोधी (प्रतिजैविकी प्रतिरोधता) की अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना (इनफार) में वेटरनरी विश्वविद्यालय को सहभागी केन्द्र के रूप में शामिल किया गया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य एवं कृषि संगठन ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के मार्फत नेटवर्क परियोजना को देश में लागू किया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर को इस परियोजना का सहयोगी केन्द्र बनाया है। इस परियोजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक देश भर में उपलब्ध आंकडों के आधार पर अनुसंधान करके पशुओं और मत्स्य क्षेत्र में रोगाणुरोधी क्षमताओं का अध्ययन करेंगे। इसके नतीजों के आधार पर पशुओं में प्रतिजैविकी प्रतिरोधकता के बारे में लोगों की समझ और ज्ञान का सुदृढ़ीकरण किया जा सकेगा।

नागरिक सुरक्षा के 30 स्वयंसेवकों को पशु आपदा का प्रशिक्षण

नागरिक सुरक्षा के 30 स्वयंसेवकों का पशु आपदा प्रबंधन पर एक दिवसीय प्रशिक्षण शनिवार को वेटरनरी विश्वविद्यालय में संपन्न हो गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र के डॉ. एस.के. झीरवाल ने बताया कि स्वयंसेवकों को आपदा स्थिति में पशुओं की सुरक्षा, प्राथमिक उपचार से सम्बद्ध जानकारी दी। प्रशिक्षित स्वयंसेवक आपदा काल में केन्द्र के विशेषज्ञों के साथ मिलकर काम कर सकेंगे। केन्द्र के विशेषज्ञ डॉ. सोहेल मोहम्मद और डॉ. शैलेन्द्र सिंह ने विकसित तकनीकों की जानकारी दी।

पशुपालकों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र की ओर से उपनिदेशक कृषि एवं परियोजना निदेशक ''आत्मा'' के सहयोग से 12–13 फरवरी 14–15 फरवरी को 30–30 पशुपालकों के दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गये। इन शिविरों में वेटरनरी विश्वविद्यालय,कृषि, नाबार्ड और नेस्ले कंपनी के विशेषज्ञों ने विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी।

कुलपति की कलम.....

उन्नत पशुपालन व नव तकनीक प्रशिक्षण के अवसरों का लाभ उठाएं

प्रिय, पशुपालक व किसान भाइयो–बहनो!

राम–राम सा।

आधुनिक तकनीक और उन्नत पशुपालन विधियों का उपयोग समय की मांग है। इनका उपयोग करके पशुपालन को आय अर्जित करने का एक प्रमुख जरिया बनाया जा सकता है। पशुओं की संख्या में बढ़ोतरी होती रही है, लेकिन समय के साथ–साथ तकनीकी ज्ञान का उपयोग कम हो रहा है। यही कारण है कि हम पशुधन की पूरी उत्पादन क्षमता का लाभ नहीं ले पा रहे हैं। इन पशुओं से पूरा आर्थिक लाभ लेने के लिए स्थानीय उपलब्ध साधनों व स्त्रोतों का उपयोग करते हुए वैज्ञानिक पशुपालन का समावेश करना पड़ेगा। पशुओं में नस्ल सुधार, गर्भाधान, बांझपन निवारण, संतुलित पोषण, पशुओं में रोग नियंत्रण, टीकाकरण उपाय और स्वच्छ और आरामदायक आवासीय सुविधाएं मुहैया करवानी आवश्यक है। तकनीकी दृष्टि से लोगों को सुदृढ़ बनाने तथा वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन व्यवसाय को चलाने के लिए पशुपालकों, ग्रामीण युवाओं, महिलाओं को विशेषकर ग्रामीण महिलाओं को जो कि पशुपालन व्यवसाय से जुड़ी हुई है को तकनीकी ज्ञान देना अति आवश्यक है। क्षेत्रीय पशुपालकों को प्रशिक्षण तथा अनुसंधान की सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा उन्नत पशु पालन, पशु प्रबंधन की नवीन तकनीकी जानकरियां और प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध है। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम समय–समय पर वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के विभिन्न जिलों में स्थित संस्थानों और केन्द्रों द्वारा निःशुल्क रूप से प्रदान किये जाते हैं। इन केन्द्रों द्वारा जिले के विभिन्न गांवों में भी प्रत्येक माह प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। किसान और पशुपालक ऐसे प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेने के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय के बीकानेर, नवानियां (उदयपुर) और जयपुर स्थित पशुचिकित्सा महाविद्यालयों के अलावा राज्य के 14 जिलों में स्थित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों से सम्पर्क कर सकते हैं। इसके साथ–साथ वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र, पशुधन चारा संसाधन, प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र, पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र, जैविक पशु उत्पाद तकनीक केन्द्र द्वारा भी समय–समय पर पशुपालन की विभिन्न उपयोगी और उन्नत तकनीक आधारित प्रशिक्षण की व्यवस्था उपलब्ध है। मेरा किसान और पशुपालक भाइयों से अनुरोध है कि वे ऐसे अवसरों का लाभ उठाकर पशुपालन व्यवसाय को लाभकारी बनाने के लिए आगे आएं।

जय हिन्द !

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी रतनगढ़ (चूरू) में पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 7 एवं 15 फरवरी को गांव सावर एवं नवां गांवों में तथा दिनांक 3 एंव 5 फरवरी को केन्द्र परिसर में आयोजि एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 28 महिला पशुपालकों सहित कुल 85 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र में प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 4, 6, 15, 17 एवं 20 फरवरी को गांव खेरूवाला, 16पी अनूपगढ़, कनोर, पदमपुरा एवं राजियासर गांवो में आयोजित एक दिवसीय तथा 25–26 फरवरी को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 174 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 5, 7 एवं 12 फरवरी को गांव वरली, हरणी अमरापुरा एवं काला महादेव गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 90 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 5, 6, 14 एवं 15 फरवरी को गांव सिंघाना, बल्दू, रताउ एवं खोखरी में आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में 96 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 3 एवं 5 फरवरी को गांव वासुआ फलां एवं रंगपुर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 60 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 7 एवं 15 फरवरी को गांव दयापुर एवं जरखौर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 36 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण शिविर आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 10, 11, 12 एवं 18 फरवरी को गांव घाटी, चान्दसेन, अजमेरी एवं बम्बोरी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 73 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 10, 12, 15 एवं 19 फरवरी को गांव जैतपुर, रिडमलसर पुरोहितान, पुगल एवं महाजन गांवों में तथा 22 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 138 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 15 एवं 19 फरवरी को गांव मेहन्दी एवं बड़ोद गांवो में तथा 3 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 70 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 6, 10 एवं 17 फरवरी को गांव सोनाड़ा, बटकोटडी एवं बोरदा गांवों में तथा दिनांक 19 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 102 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6 एवं 10 फरवरी को गांव भेरावती एवं भैसेना गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 47 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 11 एवं 13 फरवरी को गांव घेवड़ा एवं भूखेरो की ढाणी गांवों में तथा 17 एवं 20 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 64 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी झुंझुनूं द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 20, 24 एवं 25 फरवरी को गांव भोजासर, टोड़पुरा एव देवीपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 86 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 11 फरवरी को गांव गुड़िया गांव में प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर में 28 किसानों ने भाग लिया।

पशु आहार में खनिज लवणों का महत्व

पशुओं के आहार में सभी तत्वों की उचित मात्रा का होना उनके स्वास्थ्य व उत्पादन में विशेष योगदान देता है। ये सभी तत्व शरीर की विभिन्न क्रियाओं को नियंत्रित करते हैं। पशुओं के आहार में कार्बोहाईड्रेट, वसा, प्रोटीन, विटामिन के साथ साथ खनिज लवणों का अतिविशेष महत्त्व होता है। खनिज लवण मुख्यतः दांतों व हड्डियों की रचना के मुख्य भाग हैं। ये शरीर के विभिन्न एंजाइम को क्रियाशील बनाने में तथा विटामिनों के निर्माण में काम आकर शरीर की अनेक महत्वपूर्ण क्रियाओं में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से भाग लेते हैं। इनकी कमी से शरीर में कई प्रकार की बीमारियाँ जैसे प्रसूती काल में कैल्शियम की कमी से दुग्ध ज्वर हो जाती हैं। कैल्शियम, फॉस्फोरस, पोटैशियम, सोडियम, क्लोरीन, गंधक, मैग्निशियम, मैंगनीज, लोहा, तांबा, जस्ता, कोबाल्ट, आयोडीन, सेलेनियम इत्यादि शरीर के लिए आवश्यक प्रमुख लवण हैं। दूध उत्पादन की अवस्था मे खनिज लवण दूध में काफी मात्रा में स्रावित होते हैं जिससे गाय या भैंस को कैल्शियम तथा फास्फोरस की अधिक आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता को चारे के द्वारा पूरा नहीं किया जा सकता इसलिए खनिज लवणों को अलग से पशु आहार के साथ खिलाना आवश्यक हो जाता है।

कैल्शियम– यह हड्डियों और दांतो की रचना करने के साथ साथ तंत्रिका आवेगो के संचरण, मांसपेशियो के संकुचन, कई एंजाइम प्रणालियों की गतिविधि के लिए तथा रक्त का थक्का जमाने का काम भी करता है इसकी कमी से रिकेट्स, दुग्ध ज्वर जैसी बीमारिया हो जाती है । हरी पत्तेदार फसलें, विशेषकर फलियां, और चुकंदर का गूदा इसके अच्छे स्रोत हैं।

फॉस्फोरस – शरीर में फॉस्फोरस उर्जा प्रदान करने वाले कोशिकाओं का महत्वपूर्ण घटक होता है। यह कैल्शियम तथा विटामिन डी के साथ मिलकर हड्डियों के निर्माण में सहायता करता है । इसकी कमी से पाइका नामक बीमारी हो जाती है तथा पशुओ में बांझपन भी आ सकता है। पशुओ में कैल्शियम तथा फॉस्फोरस के अनुपात का बहुत महत्त्व है। इसका अनुपात 1:1 से 2:1 सबसे आदर्श माना जाता है। अनाज और मछली से बने उत्पाद फॉस्फोरस के अच्छे स्रोत हैं ।

सोडियम– यह बहुकोशिकीय द्रव का मुख्य संघटक हैं। यह खनिज साधारण नमक में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। शरीर में इलेक्ट्रोलाइट संतुलन बनाये रखने और तंत्रिका आवेग संवहन में सोडियम की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। मेगनेशियम– गेहूं की भूसी, कपास सीड केक और अलसी का केक, मैग्नीशियम के अच्छे स्रोत हैं । यह हड्डियों की संरचना और तंत्रिका व पेशियों की क्रियाशीलता के लिए जरुरी है । इसकी कमी से टिटेनी नामक बीमारी हो जाती है।

लौह– यह फलीदार पौधों, बीज कोट ,वं हरी पतेदार सामग्री में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है । यह हीमोग्लोबिन तथा मायोग्लाबिन में पाया जाता हैं , जो ऊत्तकों में ऑक्सीजन पहुँचाने का कार्य करता है । इसकी कमी से रक्तालपता हो जाती है।

क्लोराइड– यह बहि– कोशिकीय द्रव का मुख्य आयन होता है। यह भी साधारण नमक का महत्वपूर्ण घटक होता है। शरीर में इलेक्ट्रोलाइट संतुलन, परासरण दाब बनाये रखने और तंत्रिका आवेग संवहन में इसकी की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं।

पोटेशियम – यह अंतः कोशिकीय द्रव का मुख्य घटक हैं। माँस पेशियों के संकुचन व तंत्रिका आवेशों के संचार के लिए आवश्यक हैं। इसके अतिरिक्त इलेक्ट्रोलाइट संतुलन के लिए आवश्यक है।

ताम्बा – बालों और ऊन के रंग के लिए तांबा आवश्यक अवयव है। इसकी कमी से एनीमिया, वृद्धि में कमी , हड्डियों के विकार, दस्त और बांझपन आदि हो जाते है ।बीज और बीजोत्पाद आमतौर पर तांबे के अच्छे स्रोत होते हैं ।

आयोडीन– समुद्री शैवाल में आयोडीन की प्रचुर मात्रा पाई जाती है। यह थायरोक्सिन हॉर्मोन के संश्लेषण के लिए जरुरी होता है, जो कोशिकीय श्वसन के लिए आवश्यक है। .इसकी कमी से गलगण्ड नामक रोग हो जाता है। इस रोग के लक्षण ज्यादा गोभी, सोयाबीन मटर या मूंगफली के सेवन से भी दिखाई दे सकते है।

सेलीनीयम– यह , एंटीऑक्सीडेंट की तरह कार्य करता है एवं कोशिकाओं की प्लाज्मा झिल्ली को टूटने से बचाता है।

डॉ. राजेश नेहरा, डॉ. दिलीप कुमार नागर
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुओं का विषाणुजनित रोगों से बचाव

मार्च में सर्दी का प्रकोप लगभग समाप्त हो जाता है और विशेषकर दिन के समय वातावरण के तापमान में काफी वृद्धि हो जाती है जिसके कारण इस मौसम में कीड़े–मकोड़े व विभिन्न प्रकार के मच्छर की प्रजातियां पनप जाती है। इन मच्छरों व कीड़े–मकोड़ों द्वारा बहुत से विषाणुजनित रोग होने की सम्भावना रहती है। इस मौसम में पशुओं में विषाणुजनित रोगों में खुरपकां मुंहपका, तीन दिन का बुखार (ई–फीवर), माता रोग मुख्य रूप से भैंस व गौवंश में होता है। बकरी व भेड़ में माता रोग, खुरपका–मुंहपका, पी.पी.आर. व ब्लूटंग नामक विषाणुजनित रोग होने की ज्यादा संभावना रहती है और ऊंटों में ऊंट माता मुख्य रूप से प्रभावित करती है। इन विषाणुजनित रोगों में पी.पी.आर. ही ऐसा रोग है जिससे बड़ी संख्या में मृत्यु होती है। यद्यपि अन्य उपरोक्त विषाणुजनित रोगों में मृत्यु नहीं होती है लेकिन पशु की कार्य क्षमता व उत्पादन में भारी कमी होती है साथ ही अन्य रोगों से लड़ने की क्षमता में भी कमी आती है। अतः अपने पशुओं को इस मौसम में इन विषाणुजनित रोगों से बचाव के लिए सावधानियां रखनी चाहिएः

1. बदलते मौसम के प्रभाव से बचाने के लिए पशुओं को रात्री के समय छप्पर के नीचे व दिन के समय खुले में रखना चाहिए।
2. बाड़े व पशुघर के आसपास गंदगी न होने दें ताकि मच्छर–मक्खी, कीड़े–मकोड़ो के प्रकोप से अपने पशुओं को बचाया जा सके।
3. यद्यपि इस मौसम में दिन के समय गर्मी होने लगती है लेकिन अनावश्यक पशुओं को ना नहलाएं।
4. समय रहते अपने पशुओं का टीकाकरण करवाएं। मुंहपका–खुरपका, पी.पी.आर. व भेड़–बकरी माता के टीके उपलब्ध है।
5. यदि पशु में विषाणुजनित रोगों के लक्षण दिखाई दें तो उन्हें अन्य स्वस्थ पशुओं से तुरन्त अलग कर दें क्योंकि बीमार पशु से विषाणु शीघ्र ही अन्य स्वस्थ पशु में फैल सकता है।
6. पशु के बीमार होने की स्थिति मे तुरंत पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें व अपने पशु का ईलाज करवायें।
7. बीमार पशु को नरम चारा व बांटा देवें साथ ही उनके शरीर में पानी की कमी ना होने दें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

गाय व भैंसों के संक्रमण काल में प्रबन्धन का महत्व

सामान्यतया पशु ब्याने के तीन सप्ताह पहले एवं तीन सप्ताह बाद की समयावधि संक्रमण काल कहलाती है। यह समय जानवर के शरीर के अन्दर महत्वपूर्ण बदलाव जैसे – क्रियात्मक अतःस्त्रावी एवं हार्मोनल दिखाई देते है। यह समय जानवर की उत्पादन क्षमता व लाभदायकता को भी प्रभावित करता है। निम्न व मध्यम वर्ग के पशुपालक के लिये डेयरी व्यवसाय एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक पशुपालक रात–दिन मेहनत करके अपने अधिकतम धन का व्यय पशुओं के आवास प्रबन्धन एवं आहार प्रबन्धन के लिये करता है। एक पशुपालक अपने जानवरों को उच्च गुणवता का आहार एवं चारा प्रदान करता है। पशुपालक नस्ल सुधार पर भी ध्यान रखता है एवं अच्छी नस्ल का डेयरी व्यवसाय के लिये उपयोग करता है।

संक्रमण काल का महत्वः–

- प्रत्येक 14–15 माह के अंतराल में एक ब्यांत को प्राप्त करना
- उच्च उत्पादन एवं अच्छी गर्भधारण क्षमता वाले डेयरी जानवर प्राप्त करना
- संक्रमण काल एक महत्वपूर्ण समय है लेकिन अधिकतर किसान इसे नजर अंदाज करते हैं।
- किसानों की रूढिवादी धारणा है कि मै, संक्रमण काल के दौरान आहार प्रदान क्यों करूं क्योकि पशुपालक इस समय अपने पशु से दुग्ध प्राप्त नहीं करता है। परन्तु एक पशु को इस समय ही अधिकतर पोषण उवं ऊर्जा की आवश्यकता होती है। स्वयं की आवश्यकता की पूर्ति के लिये एवं भ्रूण का अधिकतर विकास भी इसी अवस्था में होता है।
- संक्रमण काल में पशु का उचित प्रबन्धन एवं पोषण नहीं होने से अधिकतर पशु तनावग्रस्त, कम उत्पादन, प्रतिरक्षा दामन क्षमता एवं विभिन्न चयापचय एवं संक्रामन बीमारियों से ग्रसित हो जाता है। इस समय पशुपालक को आर्थिक नुकसान से बचाना आवश्यक होता है। इस समय पशुओं की नियमित देखभाल भी जरूरी है।

गाय व भैंस की संक्रमण काल में देखभाल कैसे करें :–गाय,भैंस के ग्याभिन होने के बाद उसे अन्य पशुओं से अलग रखकर चारे–पानी की व्यवस्था अलग करें। प्यार से सेवा करें व आराम से रखें व पशु को कब्ज की परेशानी हो तो उसे 600 ग्राम अलसी का तेल पिलायें, पहली बार ब्याने वाली गाय व भैसों को 1400 ग्राम पशु आहार रोज खिलाये व धीरे–धीरे यह मात्रा बढाकर तीन सप्ताह पहले 4–6 किलो तक बढायें तथा अजवाइन, मैथी भी आप खिला सकते हैं। ऐसे आहार से पशु के गर्भाशय का विकास होता है व दुग्ध उत्पादन क्षमता में भारी बढोतरी होती है। ब्याने से 30–45 दिन पहले तक दुग्ध सुखाना जरूरी होता है। दुग्ध निकालना धीरे–धीरे बन्द कर देना चाहिये।

संक्रमण काल के समय महत्वपूर्ण बदलावः– शुष्क पदार्थो का कम सेवन करना महत्वपूर्ण क्रियात्मक बदलाव है। भ्रूण विकास के लिये कम शुष्क पदार्थ का सेवन सेहत को प्रभावित करता है। ऋणात्मक ऊर्जा संतुलन एक महत्वपूर्ण उपापचय समस्या का कारण है। अत्यधिक तनाव समस्या एवं विभिन्न क्रियात्मक उपापचय एवं अतः स्त्रावी संक्रमण काल में होता है। दुग्ध का कम उत्पादन एवं उत्पादन बंद होना एक कारण है। दुग्ध काल में हार्मोन प्रोलक्टिन का उत्पादन बंद होना। ऑक्सीटोसिन हार्मोन दुग्ध क्षरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। आहारी संबधी व आयन अंतर उच्च होना इस समय पर सोडियम , पोटेशियम, क्लोरीन, व सल्फर महत्वपूर्ण आहार आयन है। इस समय प्रोटीन, केल्शियम, विटामिन्स, मिनरल की कमी हो जाती है। अचानक विभिन्न उपापचय एवं संक्रमण बीमारियों का होना जैसे– मिल्क फिवर, किटोसिस, जेर का अटकना, डिस्टोकिया, थनेला इत्यादि ।

संक्रमण काल के समय ध्यान रखने योग्य बातेंः–शुष्क पदार्थ सेवन का बदलाव कर राशन परिवर्तन कर समायोजित करके आहार बनाना चाहिये। अत्याधिक कैल्सियम सेवन को अंतिम गर्भकाल में कम करना चाहिये तथा ब्याने के पश्चात मिल्क बुखार होने का खतरा रहता है। ऋणात्मक आहार आयन का अंतर संतुलित करना चाहिये। विभिन्न आवश्यक वसा अम्ल, ओमेगा–3, ओमेगा–6 अम्ल का उपयोग करना चाहिये। विभिन्नपूरक वसा घुलनशील विटामिन्स, ए,डी,ई,के देना चाहिये। ज्यादा मात्रा मे 2–3 माह में अंतिम गर्भकाल में आहार देना चाहिये। अत्याधिक तनाव नहीं देना चाहिये। अधिक ऊर्जावान आहार बाई–पास वसा , गुड़, घी, तेल देना चाहिये।

पशु आहार में खनिज लवण मिश्रण क्यों आवश्यक हैः–पशु शरीर के कंकाल (हड्डियां) और दांतों की संरचना और मजबूती इन्हीं तत्वों पर निर्भर करता है। शरीर की विभिन्न शारीरिक क्रियाओं जैसे– पाचन,रक्त बनाना, मानसिक नाडी तंत्र और कार्यो का संतुलन, मदकाल, गर्भाशय प्रजनन तंत्र, दुग्ध उत्पादन आदि के संपादन में खनिज तत्वों की अहम भूमिका होती है। न्यूक्लिक प्रोटीन जिसके द्वारा पैतृक गुण एक पीढी से दूसरी पीढी में जाते हैं कि संरचना का आधार फॉस्फोरस है। पशु शरीर बीमारियों का बचाव करने की शक्ति का विकास होता है।

संक्रमण काल में संक्रामक रोग प्रकोप होने पर कौन से उपाय करेंः–संक्रामक रोग के प्रारम्भिक लक्षण देखते ही रोगी पशु को स्वस्थ पशु से अलग स्थान पर रखे, रोगी पशु को चारा–दाना पानी की व्यवस्था अलग बर्तनों में करें। चिकित्सक से संपर्क कर पशुओं का ईलाज कराना चाहिये एवं स्वस्थ पशुओं का टीकाकरण कराना चाहिये। रोगी पशु के दुग्ध निकालने के बाद हाथ, बर्तन ऐन्टीसेप्टिक घोल से धोना चाहिये। नियमित रूप से अंतः परजीवी व बाह्य परजीवी की रोकथाम करनी चाहिये।

डॉ. रावताराम, ड़ॉ. मुकेश चन्द शर्मा एवं ड़ॉ. मनीष कुमार नागर,
वेटरनरी कॉलेज, नवानियां, वल्लभनगर

पशुपालन नए आयाम
फार्म–4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	:	बीकानेर (राज.)
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	प्रकाशक का नाम	:	प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी
	(क्या भारत का नागरिक है)	:	हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर
4.	मुद्रक का नाम	:	प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी
	(क्या भारत का नागरिक है)	:	हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
5.	संपादक का नाम	:	प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी
	(क्या भारत का नागरिक है)	:	हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्रों के स्वामी हो तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:	लागू नहीं

मैं प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी एतद्वद्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 01–3–2019

(प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–मार्च, 2020

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
खुरपका–मुँहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	बाड़मेर, चूरू, दौसा, जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, नागौर, अजमेर , कोटा, सवाईमाधोपुर, जैसलमेर
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	बीकानेर, सीकर, कोटा, उदयपुर, नागौर, जोधपुर, हनुमानगढ़ , श्रीगंगानगर, जैसलमेर, सिरोही, पाली, टोंक
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जयपुर, धौलपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, सीकर, अलवर, भीलवाड़ा, कोटा, बारां, टोंक, जोधपुर, जैसलमेर, हनुमानगढ़, झुंझुनूं, पाली, सिरोही
सर्रा (तिबरसा)	गाय, भैंस, ऊंट	धौलपुर, भरतपुर, सीकर, हनुमानगढ़
हेमरेजिक सेप्टीसिमिया (गलघोंटू)	गाय, भैंस	दौसा, अजमेर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जयपुर, सीकर हनुमानगढ़, अलवर, चित्तौडगढ़, पाली, टौंक, भरतपुर, उदयपुर, धौलपुर
बबेसियोसिस (खून मूतना)	गाय, भैंस	चित्तौड़गढ़, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, कोटा
एन्जूटिक अबोर्शन	भेड़	बीकानेर, नागौर, हनुमानगढ़
माता रोग (चेचक)	भेड, बकरी, ऊँट	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, सिरोही, पाली, जोधपुर, चूरू
लँगड़ा बुखार (Black Quarter)	गाय	चित्तौड़गढ़, बीकानेर, हनुमानगढ़, नागौर, जयपुर
ऐनाप्लाज्मोसिस	भैंस	भरतपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
बोटूलिज्म	गाय	बाड़मेर, जोधपुर, जैसलमेर, पाली, सिरोही, बीकानेर
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्शियस ब्रोंकाइटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
अन्तः परजीवी (एम्फीस्टोमियेसिस,फेसियोलियेसिस)	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	भरतपुर, धौलपुर, अलवर, कोटा, डूंगरपुर, उदयपुर, बांसवाडा, हनुमानगढ़, सवाईमाधोपुर, सीकर, बूंदी

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. राकेश राव, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, अपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, राजुवास, बीकानेर।
फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

मेहनत, लगन व कौशल से मिली सफलता

अपने इरादों से की गई मेहनत कभी बेकार नहीं जाती। इसी तरह की सोच रखती है, नोहर कस्बे की महिला पुखराज सिंधी, जो एक साधारण गृहणी है। इनका शादी जल्दी होने के कारण वह अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण ना कर सकी, परन्तु उनका मानना है कि किसी कार्य को मेहनत, लगन व कौशल से किया जाये तो सफलता निश्चित मिलती है। इसी सोच के साथ वह घरेलू स्तर पर आचार बनाने का कार्य किया करती थी। एक बार उनका परिचय कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर की महिला विशेषज्ञ वैज्ञानिक से हुआ तथा उनके सुझाव पर उन्होंने केन्द्र से फल व सब्जियों का निर्जलीकरण, दालों में मूल्य संवर्द्धन, चॉकलेट व बेकरी उत्पाद एवं आचार बनाने की विभिन्न विधियों का प्रशिक्षण व जानकारी प्राप्त की। उन्होंनें घरेलू स्तर पर दालों में मूल्य संवर्द्धन जैसे बड़ी, पापड़, मंगोड़ी बनाने का कार्य प्रारम्भ किया। इसके साथ–साथ वे निरन्तर रूप से आचार जिसमें काचरी, आम, निम्बू, मिर्च आदि बनाना प्रारम्भ किया। इस प्रकार उनकी रूचि को उड़ान मिली और वह घरेलू स्तर पर अधिक कार्य करने को प्रेरित हो गई। मुख्यतः गर्मियों में दालों का मूल्य संवर्द्धन, आचार व फल सब्जियों का निर्जलीकरण करके सालाना एक लाख रू. से अधिक की शुद्ध आय प्राप्त कर रही है। इस सफलता का श्रेय वे कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर की कृषि विशेषज्ञ को देती है।

सम्पर्क– श्रीमती पुखराज सिंघी (मो.8290798808) नोहर

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

पशुओं में किलनी व जूं से बचाव व उपचार करें

प्रिय किसान व पशुपालक भाइयों और बहनों !

पशुओं में गर्मी और सर्दी में त्वचा संबंधित रोगों का प्रभाव दाद, खुजली व बैचेनी के रूप में होता है। परिणाम स्वरूप पशु न तो अच्छी तरह खाना खाता है और न सो पाता है और लगातार खुजला कर अपने आप को जख्मी कर लेता है। पशुओं में किलनी, जूं और चिंचड़ जैसे बाह्मय परजीवी हैं जो अपना भोजन स्वयं तैयार न करके दूसरों पर आश्रित रहते हैं। किलनी से सभी प्रकार के तथा सभी आयु के पशु प्रभावित होते हैं। विशेष रूप से यह गोवत्स पशुओं में ज्यादा होते हैं। किलनी दूसरे अतिरिक्त भेड़, बकरी, सूअर, श्वान और बिल्ली में भी पाई जाती है। भैंसों में किलनी कम मिलती है लेकिन जूं इनमें अत्यधिक मात्रा में पाई जाती है। किलनी का असर प्रायः गर्मी और वर्षा ऋतु में अधिक होता है क्यांकि यह प्रजनन के लिए उचित ताप और नमी वातावरण में उपलब्ध होती है। किलनी शरीर के किसी भी भाग में हो सकती है। ये प्रायः घुमन्तू पशुओं और चारागाह से आती है। इसके अलावा यह पशुपालकों की दीवारों व फर्श आदि की दरारों व छिद्रों में छिपी रहती है और मौका मिलते ही पशु के शरीर में आ जाती है। किलनी जब पशु के शरीर में चिपक जाती है तब अपने अग्र भाग (मुख) से उनकी त्वचा को भेदती है जिससे पशु के शरीर में छोटे–छोटे घाव हो जाते है। इन घावों से किनली पशु के शरीर से खून चूसती है। किलनी की तरह जूं भी सभी प्रकार व सभी आयु के पशुओं को प्रभावित करती है। परन्तु ये गोवत्स पशुओं में कम तथा भैंसों में अधिक मात्रा में होती है। इसके अतिरिक्त जूंए भेड़, बकरी, कुता, बिल्ली व मुर्गियों में पाई जाती है। मुख्य रूप से पशुओं में दो तरह की जुंऐ पाई जाती है जिनमें एक पशु की त्वचा से ऊतक द्रव्य तथा रक्त चूसती है तथा दूसरी पशु की त्वचार की बाह्मय सतह पर एपिथिलियल कोशिकाओं को काटकर खाती है। पशुओं का किलनी तथा जूंओं से बचाने के लिए पशुओं के आस–पास सफाई रखनी चाहिए, छिद्र नहीं होने चाहिए। गोबर को दूर गडढ़े में डालना चाहिए। पशुओं के शरीर में नियमित रूप से खरहरा व ब्रश करना चाहिए। यदि फर्श कच्चा है तो भूसा/बुरादा डालकर आग से जला देना चाहिए। यदि इसके बाद भी पशुओं में किलनी तथा जूं आदि बाह्मय परजीवी होते है तो पशु चिकित्सक से सलाह लेकर दवाओं का उपयोग करना चाहिए। उपचार से बचाव बेहतर होता है, अतः समय रहते पशुपालकों को बचाव के उपाय कर लेने चाहिए।

–प्रो.(डॉ.)अकबर अली गौरी, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414431098

मुस्कान !

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से माह के प्रथम गुरूवार एवं तृतीय गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **मार्च 2020** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाई निम्न दिवसो को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
डॉ. रजनी जोशी **9414253108** जनस्वास्थ्य विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	पशुओं के प्रमुख रोग उनका कारण एवं निवारण	05.03.2020
प्रो.आर.के.धूड़िया **9414283388** प्रमुख अन्वेषक, वीयूटीआरसी, राजुवास, बीकानेर	पशुपालन के क्षेत्र में अधिक उत्पादन, प्रसार एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों की उपयोगिता	19.03.2020

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी
संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा
प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। **1800 180 6224**